430

श्री राजेश कुमार सिंह (फिरोजाबाद): शुक्रवार का दिन प्राइवेट मेम्वर्स विज्नेस के लिये नियत है। पहले ही आपने इस विज्नेस को 2, ढाई घंटे लेट करवा दिया, हमें नियमों के अन्तर्गत चलना चाहिये

समापति महोदय: सबको चांस मिलेगा।

So, you all accept the proposal that has been made by the Minister of Parliamentary Affairs? ... Yes. Let us do it that way. All will get the chance. We shall finish the government business first.

RASHID KABULI SHRI ABDUL (Srinagar): I was on my legs yesterday...

MR. CHAIRMAN: I know; your time is there.

(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Why are you getting excited? You will all get your chance. We are at the fag end of this particular Bill. We can go through it quickly and finish off with it

(Interruptions)

Please do not go on asking for a casting vote on everything. I will look after you all. Kindly allow a little permutation and combination.

PROF. AJIT KUMAR MEHTA: What is the harm if this is taken up after half-anhour?

MR. CHAIRMAN: This Bill has to go to the Rajya Sabha. I have heard you all. You will all get your opportunity.

Now we take up our Legislative Business.

17.20 hrs.

HINDU WIDOWS' RE-MARRIAGE (REPEAL) BILL (Contd.)

MR. CHAIRMAN: I think Shri Kabuli was on his legs.

He has already taken four minutes. Shri Abdul Rashid Kabuli.

श्री भ्रब्दुल रजीद काबुनी (श्री नगर): जनाब चेयरमैन साहब, ला कमीशन की 31वीं रिपोर्ट में हिन्दू विडो रीमैरिज एक्ट-356 की आव्सोलीट करार दिया गया था और उसको रिपाल करने की सिफारिश की गई थी उसी के नतीजे के तौर पर वह विल लाया गया है और मैं इसकी हिमायत करता हूं।

हमारे मुल्क में औरतों के बारे में कुछ कानून बने है, जिसका जिक्र आनरेवल मिनिस्टर ने किया है। एक जमाने में यहां पर सती की रस्म रायज थी, जिसके बारे में हमें गुमान है कि हमने उसको खत्म कर दिया है। लेकिन हकीकत यह है कि सदियां गुजरने के बाद भी आज औरतें दहेज के सवाल पर अपने आप को जिन्दा जला कर भस्म कर देती है आज भी असवा रात के जरिये आये-दिन ऐसी वारदातें सूनने में आती हैं कि औरतें दहेज की वजह से खुदकशी करती हैं या खुदकशी करने के लिए मजबूर कर दी जाती हैं। हिन्दुस्तान को आजाद हुए 36 बरस गुजर चुके हैं। हिन्दुस्तान की निस्फ आवादी 50 परसेंट आवादी-औरतों की है। हमें बड़ा घमंड और गर्व है कि हमारी प्राचीन संस्कृति में औरत का मुकाम या स्थान बराबरी का है, पुराने दौर में औरत का दर्जा मरद के वराबर था और उसके साथ कोई नाइन्साफी या गैर-बराबरी का सुलुक नहीं होता था।

अगर हम मुसलमानों की तहजीब को देखें, तो प्रोफेट हजरत मुहम्मद ने फरमाया था कि अगर तुम्हें जन्नत, स्वर्ग, चाहिए तो अपनी मां के पांव के नीचे पाओगे।

(श्री भ्रब्दुल रशीद काबुली)

लेकिन मैं दियानतदारी के साथ कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में आज सब मामलात में औरतों के साथ जुल्म और नाइन्साफी हो रही है, जिसको हम दूर नहीं कर पाए हैं। आज इस मुल्क को फख है कि एक खातून-मौहतिरमा इन्दिरा गांधी-हमारी वजीरे आजम हैं। लेकिन इस हकीकत से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे रस्मो-रिवाज इस कद्र शदीद और जालिम हैं कि अगर चाइल्ड मैरिज होता है, तो उसकी शिकार भी औरत ही हो रही है। अगर एक गिरोह से या एक आदमी दूंसरे आदमी से कोई इन्तकाम लेना चाहता है, तब भी औरत की इज्जत पर हाथ डाला जाता है और उसे ही जन्नो-जुल्म और रेप का शिकार होना पड़ता है।

हमारे मुल्क में इस बारे में कानून बने हुए हैं, लेकिन अगर एक बार औरत का तक हु स छिन जाता है, उसकी पिवत्रता का नुकसान हो जाता है, तो दुनिया की कोई अदालत उसे नहीं बचाती उसके लिए जालिम शख्स हो चाहे कितनी सजा दी जाए, लेकिन हकी कत यह है की औरत की इज्जत एक बार गई फिर वापस नहीं आती है और इस शोशल स्टिग्मा से उसे कभी छूट नहीं मिलती है।

जिससे उसको कभी छूट नहीं मिलती। यह रेप के जो केसेज होते हैं इन वारदातों से एक औरत की जिन्दगी अजीर्ण हो जाती है। तो इस किस्म की वारदातों के लिए और सबसे बड़ी बुराई जो दहेज की है जिसकी वजह से हजारों औरतें तवाह हो रही हैं, खुदकुशी कर रही हैं, इसी दिल्ली शहर और हिन्दुस्तान के कोने-कोने में यह वारदातें हो रही हैं -- इनको रोकने के लिए महज सोशल प्रेशर ही नहीं, मजबूत कानून भी बनाया जाना चाहिए और मैं समझता हूं रेप जैसे जुर्म के लिए फांसी से कम सजा नहीं होनी चाहिए क्योंकि जिस औरत के साथ ऐसी वारदात हो जाती है उसकी तो उसी दिन मौत हो जाती है। हमारी रियासत जम्मू कश्मीर में दहेज पर पावन्दी लगाने के लिए कानून बनाया गया लेकिन मैं शनतदारी से कहना चाहता हूं कि वह औरतें या लड़कियां जिनके साथ ऐसी वारदात होती है, जिनसे जहेज मांगा जाता है, वह पुलिस के सामने नहीं आ रही हैं क्योंकि उनके ऊपर समाज का प्रेशर है। उनके साथ नाइन्साफी होने के बावजूद वह कोर्ट या पुलिस में नहीं जा सकती हैं। इस बिना पर मैं मिनिस्टर साहब की कान्शेन्स को ललकारता हूं और यह कहना चाहता हूं कि इस विल में तो कुछ नहीं हैं लेकिन आज इस मौके पर इस बहाने मैं कहना चाहता हूं कि औरतों के साथ जो नाइन्साफियां होती हैं उनको रोकने के लिए और उनको पूरे हक्क दिलाने के लिए कापको पूरे उपाय करने होंगे। जहेज की बुराई, चाइल्ड मैरिज, इसमें आज भी कोई कमी नहीं हुई है इसलिए नये हालात को देखते हुए आपको सस्त कानून बनाने होंगे।

عدالرنبدكابلي اسرى نكرا بخاب بيرمن صاحب ، لا كمين كى ١٩ دى

رايدك بين مندو ورو دي ميرن ايك ١٨٥١ كو آب سوليك قرار دبا كياتما ادر أس كو رسيبل كرنے كى سفارش كى كئى متى - اس كے نيتھے كے طور سے بل لایا گیا نے اور میں اس کی جایت کرتا ہوں ۔

ہادے ملک میں عوروں کے بارے میں کچھ کانون ہے میں جن کا ذکر انزیل متسرّ ہے ویا ہے ایک زمانے میں میاں برستی کی رسم رابع متی جن کے بارے سی میں گان ہے کہ م نے اس کو خم کر دا ہے ، میکن حقیقت یہ سے کہ صدایاں گزرنے کے اجد تھی آج عورتیں جہیز کے سوال بر اپنے آب کو زندہ عبلا کر ختم کر دی ہیں ۔ سمج بھی اخبارات کے توریعیہ آئے دِن ایسی وار دائیں سُستے ہیں آتی ہیں کہ عورتیں جہیز کی وجرسے تعودکشی کر رہی ہیں یا نودکشی کرنے کے بلنے مجبور کر دی جاتی ہیں ۔ ہندوستنان کو آزاد ہو کے ۳۶ بس گزر مجکے بنی - ہندوسنان کی نعف آبادی (-ه برسنت آبادی) ور قرن کی نے ۔ ہمیں بڑا گھنڈ اور گورو نے کم ہاری پراجین سنسکرتی بین عورت کا معام یا استفان برابری کا بے اور ایسے وور میں عورت کا درجہ مرد کے برابر تھا أور اس کے ساتھ کوئی ناانعاق یا غرراری کا سلوک تہیں ہونا تھا۔

اگر ہم سمانوں کی نبدیب کو وکھیں تو ہر و نیٹ صغرت محد صلع نے فرمایا مقا کہ اگر تہیں جنت سورگ جا بھے تو اپنی ماں کے باوک کے نیچے باد کے ۔ میک یس دیانداری کے ساتھ کنا

جاننا ہوں کہ مندوستان میں ان سب معاملات بس عورتوں کے ساتھ کلم اور نا انصائی ہو رہی ہے حکو ہم ادور نہیں کر یائے ہیں ۔ آج اس ملک کو فخر ہے کہ ایک خاتون محترمہ اندرا کاندھی ہماری وزير اعظم بي ميكن أس عقيقت سے ويمي انکار نہیں کی جاسکتا کہ ہمارے رسم ورواج اس قدر شدید ادر ظالم بین که اگر میاند میرج ہوتا ہے تو اس کی شکار بھی عورت ہی ہو رمی ہے۔ اگر ایک گروہ دوسرے گروہ کے یا ایک آدی دوسرے آدی سے کوئی انتقام بینا جاتبائے نب بھی عورت کی عربت أبر إلى تقر والا جانا ب أورات ہی جبری ظلم اور ویب کا شکار ہوتا پڑا

بمارس ملك من اس بارس من قانون نے ہُوئے ہیں لیکن اگر ایک بار عودت کا تعذَّ جِينَ جامَّا بِ اس كى إرتراً كا تغمان ہو جانا ہے ' نو دنیا کی کوئی عدالت أسے نہیں بجاتی - اس کے لئے کا الم شخص کو جاہے کنی سزا دی ماست لیکن مفیقت برہے كه عورت كى عزت ايك باركني بير دا بيس نيس آتی ہے اور اِس موشل اسکماسے اسے کمی چھوٹ نہیں متی ہے۔ جس سے ابسس کو کھی چیوٹ بنیں ملتی ۔ یہ ویب کے بوکیٹر موت میں ان وار داتوں سے ایک عورت کی زندگی اجرن ہو جاتی ہے ۔ أو اس مم كى وارد افوں ك سے اور سب سے بڑی نرافی ہو جہز کی ہے جس کی وج سے ہزاروں عورتیں تباہ ہمو ری ہیں ۔ ان کورد کے کے بعث محض سوشل يريشرى بنين مغبؤلم فالأن بحى بليا مانا ما سے اور بین محمقا روں دیب جیسے

436

ہرم کے ہے کیمانی سے کم سزا سنیں ہوتی بیامی کیونکہ جس عورت کے ساتھ ایسی واردات ہر جاتی ہے اس کی نو اُسی دن موت ہو جانی ہے۔ ہماری ریاست جوں کشمیر میں جہر بر بابندی نگانے کے سے قالان بنایا گیا مین میں دمانت داری سے کنا جانبا ہوں کہ وہ عرزس بالركال حن كے ساتھ اليى واردات ہوتی نے اجن سے جہز مانگا ماتا کے وہ ہدلیں کے سامنے نہیں سے رہی ہیں کیونکہ ان کے آویہ ساج کا پرلیٹرنے ۔ ان کے ساتھ نا انصافی ہونے کے ماوجود وُہ کورٹ یا وليس مين تهس جا سكين مي - اس بنا ر میں مسر صاحب کی کا نشینس کو للکارا ہوں اور یہ کنا جائنا ہوں کہ عوروں کے ساتھ ہو تا انصافیاں ہوتی ہیں ان کو روسکے کے بئے اور اُن کو بیرے حقوق دلانے کے بئے آپ کو پُرسے ایائے کرنے ہوں أَى يَالَى عِلْلَهُ مِيرِيجَ إِلَ میں آج بھی کوئی کی نبیں ہوتی ہے اسلیم نے مالات کو دیکھتے ہوسے آپ کو سخت فانون نانے ہوں گے۔

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COM-PANY AFFAIRS (SHRI GHULAM NABI AZAD): Mr. Chairman, Sir, this Bill has been welcomed by all the hon. Members who participated in the debate on this Bill. I would like to thank all of them. I welcome their suggestions but at the same time I would like to say that this Bill is a repeal Bill, very simple and short. The suggestions which have been given by the hon. Members would have been of great importance and value had we have to bring a new legislation

or any amendment to the existing Bill I have already said in my opening speech the object of this Bill is to repeal the Hindu Widows Re-Marriage Act, 1856. The Act of 1856 is an Act removing all legal obstacles of Hindu widows. The Act was enacted because as the first para of the preamble stated in 1856-Hindu widows with certain exceptions were by reason of their having once married hold to be incapable of contracting a second valid marriage and the off-spring of such widows by any second marriage were held to be illegitimate and incapable of inheriting property. Sir, the object of this Act was relieve all such Hindu widows from this legal incapacity of which they complained and the removal of all legal obstacles to the marriage of Hindu widows.

This Act of 1856 which removed the dis-ability under which Hindu widows had been suffering and allowed them to re-marry under this Act but subsequently one hundred years later four more Acts were passed They are-Hindu Marriage Act, 1955; Hindu Succession Act, 1956, Hindu Minorty and Guardianship Act, 1956 and Hindu Adoption and Maintenance Act, 1958.

After very careful consideration of the provisions of the Act of 1856, the Law Commission also reached the conclusion that after the enactment of these four Acts, the Widow. Remarriage Act of 1856 has become obsolete and old and is no longer of any practical utility and should be repealed. Sir, as I have already mentioned, this is a very simple Bill which we have put forth before the House. It is just to repeal it. This matter is already being taken care of by these four Acts which I have already mentioned. So, there is nothing new. There is nothing new in this legislation. I would not like to take up more time of the House. But I would only like to clear up two things which have been mentioned in the House very specifically. I would like to assure you that I share the anxiety shown by hon. Members as far as social reforms in society regarding women is concerned in general and more particularly about widows and about child marriages.

There has been a mention about Dowry also I assure the House that our Government is taking care of it. Our Prime Minister is very much eager and she is very much concerned about abolition of dowry. We have taken up this matter with top priority, not only at the Governmental level but also at the organisational level.

There has been a mention about a uniform civil code also in the debate. Our Government is very clear so far as this matter is concerned. Enactment of uniform civil code involves amendment to personal laws of minority communities. It is the Government policy not to make any change in the laws of the minority community unless the initiative for the change comes from that minority community itself.

With these few words I would like to thank all the hon. Members of the House who have participated in the Debate and made various points.

MR. CHAIRMAN: The question is: "That the Bill to repeal the Hindu widows' Re-marriage Act, 1956, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: We take up lause-by-clause. The question is:

"That clause 2 stand part of the Bill."

The motion was adopted

Clause 2 was added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LAW JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI GHULAM NABI AZAD): Sir, I beg to move:

"That the Bill be passed"

MR. CHAIRMAN: The question is: "That the Bill be passed."

The motion was adopted.

17.33 hrs

SALARY, ALLOWANCES AND PENSION OF MEMBERS OF PARLIA-MENT (AMENDMENT) BILL. Contd.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH):

I beg to move:*

"That the Bill further to amend the Salary, Allowances and Pension of Members of Parliament Act, 1954, be taken into consideration."

MR. CHAIRMAN: Do you want to say anything on this Bill?

SHRI BUTA SINGH: I am not very keen to make any long speech. The contents of the Bill are known to almost all the Members of both sides of the House. Also, we are now very short of time. I will not take the time of the House. I would only request hon. Members of the House to straightway pass this Bill.

SHRI RAMAVATAR SHASTRI (Patna): No, no; we want to speak.

MR CHAIRMAN: Motion moved: "That the Bill further to amend the Salary, Allowances and Pension of Members of Parliament Act, 1954, be taken into consideration."

Mr. Sudhir Giri' to speak.

श्री चन्द्रपाल शैलानी (हाथरस) : माननीय सभापति महोदय, इस सम्बन्ध में अनेक बार बहस हो चुकी है। अब इस पर बहस न कराई जाय और इसको पास करके दूसरे सदन में भेज दिया जाय

^{*} Moved with the recommendation of the President.